❑रासौ-काव्य

राम रासौ

माधवदास दधवाड़िया

कवि परिचै

मारवाड़ परगना रै रैण ठिकाणां रा अचलदास रायमलोत रा कामदार अर पछै बळूंदा रा चांदा वीरमोत रा राजकवि (पोळपात) रैया चूंडा दधवाड़िया रै घरै वि. सं. 1615 रै लगैटगै माधवदास दधवाड़िया रौ जलम होयौ। राम रासौ जैड़ा महाकाव्य री रचना कर आप कवि-कुळ नै अंजस दियौ। वीरता अर भक्तिपरक इण महाकाव्य री रचना सूं रीझ नै जोधपुर महाराजा सूरजसिंह अपरनाम सूरसिंह कवि माधवदास दधवाड़िया नैं वि. सं. 1654 री फागण सुद बीज नैं सोजत परगना रौ नापावास गांव देयनै आघमान दियौ। जोधपुर राज्य री बही रै मुजब महाराजा सूरसिंहजी माधवदास दधवाड़िया नैं मेड़ता परगना रौ जारोड़ा बैणां नांव रौ गांव ई इनायत करियौ। आपरी दूजी छोटी रचना 'गज-मोख निसांणी' ई भक्ति-रचना रै रूप में घणी चावी है। भक्तिकालीन कवियां में राम रासौ रा रचयिता माधवदास दधवाड़िया री बडाई में बीकानेर महाराजा पृथ्वीराज राठौड़ रौ कैयोड़ौ औ दूहौ कवि रा व्यक्तित्व नैं उजागर करै—

चूंडै चत्रभुज सेवियौ, ततफळ लागौ तास।
चारण जीवौ चार जुग, मरौ न माधवदास।।

(ईस अरदास रै फळसरूप चूंडा रै घरै माधवदास जलमियौ। हे माधवदास, थूं जुगां-जुगां तांई जीवतौ रह, थारी सिरजण खिमता सूं औ जस अमर व्है जावै।)

माधवदास दधवाड़िया री आपरै इस्टदेव रै वास्तै पूरी सरधा, निस्काम भक्ति, अटूट विस्वास, अटळ आस्था रै कारण आपरै जीवण में केई चमत्कारी घटनावां घटी। आं घटनावां रा दाखला 'रामरासौ' रा संपादक शुभकरण देवल इण ग्रंथ री भूमिका में दिया है, जका बांचणजोग है। श्री देवल 'राम रासौ' रै संपादन साथै कविकुळ सूं संबंधित केई दूजी जाणकारियां कराई है। अरथ, भाव अर काव्य-सौष्ठव साथै इण महाकाव्य नैं पाठकां सारू सरल बणावण रौ अबखौ काम पूरौ कर जातीय रिण अर पितृरिण सूं उरिण होया है। माधवदास दधवाड़िया रा वंसज होवण रौ प्रमाण 'राम रासौ' री भूमिका लिखनै आप दियौ है। आपरी लेखणी नैं घणा रंग।

पाठ परिचै

माधवदास दधवाड़िया रचित 'राम रासौ' मूळ रूप सूं अेक भक्ति परक महाकाव्य है। राजस्थानी साहित्य में रासौपरक काव्य री आपरी जबरी परंपरा रैयी है। 'रासौ' काव्य में वीर वरणन करयौ जावै या औ मानीजै कै 'रासौ' वीरकाव्य ई होवै। आदिकाल सूं ई अठै रास, रासु, रासउ अर रासौपरक रचनावां री परंपरा रैयी है, जिणरौ खास अरथ रसपरक रचना ई लगायौ जाय सकै। जूनी जैन रचना भरतेश्वर बाहुबलि रास रै पछै अनेक रासपरक जैन रचनावां में रेवगिरि रास, जीवदया रास, आबू रास, तेजसार रास आद रा नांव गिणाया जाय सकै, जिणां में सांत रस रै साथै उपदेसां अर वरणन री प्रधानता रैयी है। देस-काळ अर थितियां मुजब वीरता इण संस्कृति में इत्ती घुळगी-इत्ती रळगी कै कोई पण इणसूं टळ'र नीं निकळ्यौ। अठै रा कवियां भक्ति रै साथै वीरता, सिणगार रै साथै वीरता,

प्रेमाख्यानां रै साथै वीरता रौ वरणन कर इण बात नैं सिद्ध करदी कै राजस्थानी संस्कृति बहुरंगी है अर वीरता उणरी असली ओळखाण है। वीरता रै पाण सगळा रंग उणनै मिळिया है। राम रासौ में ई भक्ति रै साथै वीरता रौ वरणाव पुरजोर होयौ है। ज्यूं वेलिकार पृथ्वीराज राठौड़ सिणगार ग्रंथ गूंथ'र वेलि में कृष्ण-सिसुपाळ जुद्ध में वीर रस रौ वरणन करियां बिना नीं रैया, उणीज भांत राम-रावण जुद्ध में वीर रस रौ सांगोपांग वरणन 'राम रासौ' में होयौ है। संपादक इणरी छंद संख्या 1600 मानी है। इणमें अनेक छंदां रौ प्रयोग करीज्यौ है, जिणमें दूहा, सोरठा, पद्धरी, रसावळा, झूलणा, मोतीदाम, गाहा, कवित्त, चौपाई, बिअक्खरी छंदां रा नांव गिणाया जाय सकै।

तुलसीदास कृत रामचरितमानस ज्यूं इणमें ई बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किस्किंधाकांड, सुंदरकांड अर लंकाकांड रै पछै उत्तरकांड है, उणी भांत पूरा सात अध्यायां में पूरी रामायण राम रासौ रै नांव सूं लिखीजी है। राजस्थानी भासा रै रामकाव्य री आपरी इधकाई है। इण काव्य रै वरणन में बात कैवण रौ आपरौ न्यारौ ढब, केई सिल्पगत अर रूपगत विसेसतावां देखीजै। राम रा रूप वरणन में जिकी ओपमावां कवि दी है, वै साव निकेवळी। राम रौ विसाल अर मोटौ लिलाड़ तीनूं लोकां रा स्वामी होवण रौ परिचै देवै। भौहां जाणै कामदेव रौ तण्योड़ौ धनुस, सरीर हाथी जैड़ौ पुस्ट, कान कामदेव री सवारी मछली जैड़ा रूपाळा, कांधा शिवजी रै वाहन नंदी जैड़ा बळवान, हीरकणां ज्यूं दीपता अर बुगलां री डार जैड़ा धोळा अर बिरळा दांत, धनुस रा निचला भाग या सिरा तांई पूगण वाळा विलक्षण लांबा हाथ आद ओपमावां कित्ती मौलिक लागै। राम रासौ में तुलसीदास जी कृत मानस री चौपाई 'ढोल गंवार सूद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी' रौ लोप कर कवि सामाजिक समानता रा भाव उजागर करै।

'राम रासौ' भक्तिकाव्य है। इणमें भक्ति रै भावां री प्रधानता है। आज रै जुग में ई राम जैड़ा व्यक्तित्व, जीवण-आदर्शां, जीवण-मूल्यां री समाज में घणी जरूरत है। मिटता मानवी मूल्यां रै इण जुग में विग्यान ज्यूं-ज्यूं आगै बधियौ, मिनख लारै होवतौ गयौ। अबै वौ अेक कळपुरजौ बणनै रैयग्यौ है। मिनखपणा नैं राखण वास्तै इण काव्य नैं पढावण री घणी दरकार है। पारिवारिक साख नैं सवाई कर आपरौ जीवण देस-समाज अर परोपकार में लगावण वाळा, जीवण में अबखायां सूं लड़'र आगै बधण वाळा, त्याग, समरपण, सहजता, हेत-अपणायत री मिठास वाळा अेक सार्वभौमिक पात्र री आज रै जुग में घणी जरूरत है। उण पात्र रा चरित्र नैं पढ'र छात्र अवस ई वांरा गुणां नैं अंगेजैला। इणीज विस्वास साथै 'राम रासौ' महाकाव्य रै अंस री बानगी इण पाठ में राखीजी है।

'राम रासौ'रै इण अंस में उण बगत रौ वरणन है जद कैकयी राजा दशरथ सूं दोय वरदानां में पैलौ राम नैं चवदै बरस रौ बनवास अर दूजौ भरत नैं राज देवणौ मांगै तद राजा दशरथ रघुवंसियां री रीत मुजब 'प्राण जाय पर वचन न जाई'रै कारण कैकयी रै वाद आगै हार जावै पण राम जैड़ा वाल्हा सपूत नैं बनवास भेजण री बात सूं अथाग सोग रा समदर में डूब जावै। प्रसंग उण सूं आगै रौ है कै दशरथ री इण दसा नैं देख मंत्री सुमंत्रजी राम नैं बुलावण आवै अर कैवै कै आपनैं राजा दशरथजी याद करै। उणी बगत राजतिलक खातर होवण वाळा जप, यज्ञ आद रै पछै गुरु वसिष्ठ नै दक्षिणा में दस हजार गायां श्रीराम दी अर रूपाळा मदमस्त हाथी माथै बिराजनै राम-लक्ष्मण दोनूं भाई राजा दशरथ कनै जायनै प्रणाम कर्या। राम नैं देखतां ई भावी दुख रौ सोच नै संवेदना रै साथै राजा दशरथ राम रौ लाड कर्यौ, पछै बांथां में भरनै रोवण लागा। कैकयी री सगळी करतूत बताई कै वा किण तरै म्हारै साथै छळ करनै म्हनैं वचनां में बांध्यौ अर अबै थारै वास्तै चवदा बरसां रौ बनवास अर दूजौ भरत नैं राज देवणौ मांगियौ है। श्रीराम पिता दशरथ नैं धीरज देवै, समझावै अर आपरै वास्तै सौभाग्य री बात मानै। वै कैवै कै सतवादियां सारू वचन तौ भाटै अर लोह माथै खेंच्योड़ी लकीर ज्यूं अमिट होवणी चाईजै। हे पिताजी! आप दुखी मत होवौ, म्हैं आपरै वचन परवाणै वन में जाय सरीर नैं तपाऊंला। अरथात सगळी विपदावां (सियाळौ, उन्हाळौ, बिरखा में पड़ण वाळौ सी, लूवां, ओळा) नैं झेलूंला अर सुखां रौ त्याग करूंला। बिचाळै ई कैकयी राम री बातां री हांमळ भरै अर कैवै कै पिता री आग्या मानण वाळौ पुत्र ई साचै अरथां में पुत्र बाजै। श्रीराम कैकयी नैं भरोसौ दिरावतां कैवै कै हे माता! आपरौ

जायोड़ौ भरत अयोध्या रौ राज करैला अर म्हैं वन में रैयनै तीन लोक रा राज-सुख नैं भोगूंला, जिणमें माता-पिता री आग्या रौ पाळण अर छोटै भाई भरत रै प्रति हेत रौ भाव है।

इणरै पछै माता कौशल्या नैं समझावतां राम कैवै कै हे माता! महाराज त्रिया-चरित्र नैं समझ नीं सक्या अर कैकयी री बातां में आयग्या तौ ई कांई होयौ, वै आपरा पति अर म्हारा पिता है। उणां री निबळाई (विसयासक्ति, स्त्री पेटै प्रेम रै वसीभूत होवणौ) दूजां साम्हीं प्रगट नीं करता थकां उणां नैं पूजनीक अर आदरजोग ई मानणौ म्हारौ फरज है। माता गरभ धारण कर पुत्र नैं जलम देवण सूं लेयनै मोटौ होवण तांई उणरौ पाळण-पोसण करण रै कारण सरब पूज्य है। माता री ठौड़ ऊंची है अर उणरी आग्या ई पुत्र नैं मानणी चाईजै। राम अठै आपरी बात नैं मजबूत करण सारू परसुराम रौ दाखलौ ई देवै जिकौ पिता री आग्या सूं माता 'रेणुका' नैं मार दी ही अर पिता सूं मिळण वाळा वरदान अर आसीस सूं पाछी जींवती ई कर दी ही। अठीनै लक्ष्मण सेसनाग रा अवतार है, उणां नै रीस आवणी सुभाविक है। वै आपरौ सामधरम निभावतां कैवै कै म्हैं म्हारा स्वामी राम री भलाई वास्तै भरत अर अयोध्या तौ कांई, तीनूं लोकां नैं मिटावण री खिमता राखूं। पण राम आपरै भाई लक्ष्मण नैं नीठ सांत करै, उणां रै साहस, वीरता अर सामधरम री बडाई करै। आगै राम कैवै कै म्हैं सपनै में ई पिता री आग्या नैं नीं टाळ सकूं अर अयोध्या रै राज रौ भोग नीं कर सकूं।

कवि कैवै कै इण भांत राम माता कौशल्या सूं आसीस ली। माता सूं विदा लेवतां लक्ष्मण ई राजसुख नैं छोड साथै चालण वास्तै राम रै साम्हीं देखण लागै। राम छोटा भाई री अपणायत अर सामधरमी आगै लाचार हा, सो माता सुमित्रा री आग्या लेवण वास्तै भेजिया। माता सुमित्रा लक्ष्मण नैं साथै ले जावण री अरदास राम सूं करै तौ राम लक्ष्मण री रिछ्या रौ भरोसौ माता नैं देवै। माता सुमित्रा लक्ष्मण नैं घणी भोळावण देवै कै हरमेस माता-पिता जाणनै सीता-राम री आग्या रौ पाळण करजै। सीता नैं म्हारै ज्यूं अरथात माता ज्यूं आदर दीजै अर दशरथ जैड़ा राघव (राम) नैं जाणजै। जठै सीता-राम रैवै उठै ई अयोध्या रौ राज अर सुख है। सीता-राम री सेवा लारली केई-केई पीढियां नैं तारण रौ काम करैला, जिणरौ फळ लक्ष्मण थनैं लेवणौ है। माता सुमित्रा लक्ष्मण नैं करतव्य रौ पाठ पढावै।

कवि कैवै कै सीता जद सादा वेस में राम नैं देखै तौ अचूंभौ करै अर पूछै कै आपरै साथै तौ अबार भांत-भांत रा गाजा-बाजा, विरुदावली गावणिया बंदीजन, छत्र-चंवर, साथै आपरा साईनां सखा होवणा चाईजै, जिका हाथियां-घोड़ां माथै बैठा छैल-छबीला लाड-कोड करता आवै, पण औ दरस नीं देखनै म्हनैं वैम है कै अवस ई राजतिलक में कीं विघन पड़ग्यौ है। श्रीराम सीता नैं सगळी बात समझावै अर वन में साथै नीं चालण री सीख देवै। माता री सेवा रौ भार सूंपणी चावै। कांकड़ रा डरावणा जिनावरां अर अबखायां नैं बतायनै सीता नैं अयोध्या में रैवण रौ कैवै, पण सीता आपरा पडूत्तरां में कैवै कै राम आपरै साथै म्हनैं कांई डर है अर जठै आप हौ उठैई म्हारै वास्तै सातूं सुख है। सीता रा द्रिढ निस्चै आगै राम नैं साथै चालण री हामळ भरणी पड़ै। इण भांत सीता, राम अर लक्ष्मण बनवास सारू व्हीर होवै। माता कौशल्या राम नैं सीता अर लक्ष्मण री रिछ्या करण वास्तै भोळावण देवै। श्रीराम माता कौशल्या नैं भरोसौ दिरावै कै सीता म्हारी जोड़ायत है, अरधांगनी है अर लक्ष्मण जीमणौ हाथ है। अरथात जीवण रौ अभिन्न अंग। म्हैं प्राण-प्रण सूं आं री रिछ्या करूंला। पिता री आग्या रौ पाळण, धरम री थरपणा, अत्याचार रौ अंत कर पूरण संतोस सुख नैं धारण कर सीता अर लक्ष्मण रै साथै राजी-खुसी पाछौ अयोध्या आवूंला।

जटायु प्रसंग : मिनख रौ पसु-पंखेरुवां साथै आद जुगाद सूं संबंध रैयौ है। पंखेरुवां में ई संवेदना होवै। वै आपरौ धरम निभावण में कदैई-कदैई मिनखां सूं आगै निकळ जावै। जटायु रा प्रसंग में उणीज मानवी संवेदना नैं मांसाहारी डरावणौ जीव विडरूप जटायु रै मिस महाकाव्यकार उकेरणी चावै। रावण जद सीता रौ हरण कर रथ में बैठायनै ले जावै तौ सीता रौ विलाप सुण जटायु उणनैं ढाबणी चावै। दुस्ट रावण नैं कायरता रा वचन कैवै कै वौ इत्तौ बळवान होयनै अेकली जाण सीता रौ हरण कर्‌यौ है। राम नैं ललकारणौ हौ। रावण उणनैं कैवै कै अरे मूरख! दूजां रै वास्तै म्हारै हाथां सूं क्यूं मरणौ तेवड़्यौ है। परोपकार अर कर्तव्य री ओळखाण करावतौ जटायु आपरी चूंच अर पंजां

सूं रावण रै सरीर में घाव करै। रावण अेकर तौ घायल होयनै रथ नैं थांभै पण अंत में रावण रा बळ आगै बूढा जटायु नैं हारणौ पड़ै। रावण तलवार सूं उणरी पांख्यां बाढ देवै तौ वौ धरती माथै जाय पड़ै। ठौड़-ठौड़ तलवार रा घावां सूं घायल जटायु पड़्यौ है। वौ सीता नैं पुत्री सीता कैवै। दशरथ सूं आपरी मित्रता री ओळखाण करावतां पिता ज्यूं सीता री रिछ्या करणी चावै पण कर नीं सकै। अठीनै राम अर लक्ष्मण सीता नैं सोधता-सोधता आवै अर मारग में रथ रा टुकड़ां साथै पांख्यां, चूंच आद कट्योड़ा पड़्या देखै अर जटायु नैं देखनै उणनैं आपरी गोद में लेय उणरी देही माथै हाथ फेरै। जटायु राम नैं कैवै कै म्हैं आपनैं मूंढौ कीकर दिखावूं। म्हारै देखतां रावण सीता नैं लेयग्यौ अर म्हैं उणनैं छोडाय नीं सक्यौ। जटायु में कर्तव्य निभावण रा गुण है तौ वीर जित्तौ दरप ई। उणनैं इण बात री आत्मग्लानि है कै वौ सीता नैं रावण सूं नीं छुडाय सक्यौ।

जटायु रा धरमजुद्ध सूं राम घणा राजी होया। जटायु नैं पितृसखा, पितानुज, वीर सिरोमणी जैड़ा सबदां सूं आदर दियौ। इण भांत श्रीराम जटायु रौ उद्धार कर्‌यौ। अंत समय में भगवान राम रा कर-कमलां रौ परस पायनै गिद्धराज मुगती रौ मारग लियौ। गिद्धराज जटायु रौ त्याग, समरपण भाव मिनखां नैं सीख देवै तौ श्रीराम रौ जटायु रै वास्तै पिता बराबर सम्मान जीव समानता, जीवदया अर राम रा आदर्शां अर जीवण-मूल्यां रौ पाठ पढावै।

राम रासौ

अयोध्या-कांड

छंद बिअखरी

कहै सुमित्र दरिसंण काजा। रांम पधारौ त्रेड़ै राजा।।1।।
तांम रांम जप होम धांम तस। दीवी वसिष्ट धेन सहंसदस।। 2।।
चढिया आंणि हसती चौदंती। पहूंता रांम लषंमण नरपती।। 3।।
दसरथ धांम तांम रघुनंदन। वेगि पधारि कियौ पग वंदन।। 4।।
देखि रांम दसरथ सु दु:खित। मेल्हि धाह लागी गलि मुखित।। 5।।
इणि राखव कैकई अभागी। मो सौं छळ करि वाचा मांगी।। 6।।
पैनो राघव वनि पठावौ। भरथ राज अभिषेक करावौ।। 7।।
अहित पिता जणि करौ अवग्या। अहं बंधु लै राज अजोध्या।। 8।।
राजा सुंणै पयंपै राघव। ताइ वडाई वंसि नहीं तव।। 9।।
मुखि भाखियौ सु क्यूं मेटिजै। पाथरि लौह रेख पेखीजै।।10।।
पिता सति वाचा नै पाळौं। जळ वंनि सीत अंग तन जाळौं।।11।।
पिता हुकंमि मैं त्यागौं प्राणा। राजपाट सुंदर सुख रांणा।।12।।
सुणौं राम कैकई संपेखै। सोई पुत्र जो पिता संतोखै।।13।।
थापै राज अजोध्या सुत थारौ। है मां त्रिभवण राज हमारौ।।14।।
सुखनिधि राघव वन संग्रहिया। राजा मुरछगत होइ रहिया।।15।।

××

त्रियाजीत पंणि प्रिया तुम्हारा। मदनांजित तोय पिता हमारा।।16।।
पिता सति वाचा पाळीजै। माता वाच तो काइ मेटीजै।।17।।
उदर मांझ दस मास अधारै। वळै वरस दस पोषी वधारै।।18।।
पिता हुकंमि रेणका पहारै। माता परसरांमि मां मारै।।19।।
भणै लखमंण हितु भंणीजै। माता भ्रित पिता सु मुणिजे।।20।।
भ्रित मो ऊभै लखमंण भाखै। राघव रौ टीलौ कुंण राखै।।21।।
सहित अजोध्या भरथ संघारौं। मुर ही भंवण कहै तौ मारौं।।22।।
मैं जांणौं तो पौरिष लषमंण। तू अवतार सेस संहसफण।।23।।
राघव कहै त्रिहूं भवंणां रण। तो सौं कुंण मंडै दसरथ तण।।24।।
मैं किम पिता हुकुंमि मैटीजै। लाख करै तोई राज न लीजै।।25।।

××

माता सीख रघुपति मांगै। तांम लषमंण राज तियागै।।26।।
कहै सुमित्रा आग्या कीजै। लषमंण बंधव साथै लीजै।।27।।
प्रांण हीतै मौनौं बहु प्यारा। निमष न मेल्हो लषमण न्यारा।।28।।
कहै सुमित्रा राम सेव करि। अनंत कोटि कुळ लषमंण उघरि।।29।।
लषमंण सीता मौंने लेखै। दरसथ सरिसा राघव देखै।।30।।
सरिखौ वंन अजोध्या संपति। रहैतां जांणै संगि रघुपति।।31।।
पुत्र उभै मां लगा पाए। सीता धांम श्रीराम सिधाए।।32।।
सीता सुवर विलोकी सुज। धरै न सीसि छत्र चम्मर धज।।33।।
सर वाजित्र न वंदिण साथी। हैमर रथ हसम न हाथी।।34।।

××

मोनौं वंनि मेल्हंण मा त्रेही। छळियौ दसरथ भरत सनेही।।35।।
सीता इहे सीख संभरीजै। कौसल्या री श्रेव करीजै।।36।।
भरता सौं यम सीता भाखै। पलक न जीऊं दरसंण पाखै।।37।।
वदै रांम वंनि सिंघ र वारण। दैति नाग राखिस दुःख दारण।।38।।
सकल सदुःख यंद्र पदवी सुख। मोनूं तहां जहां श्रीवर मुख।।39।।
सीता हेक मनि देखै संगि। सती पहुंचि कहीयौ श्री रंगि।।40।।

××

भणै कौसल्या रांम संभरीजै। रिख्या सीत लषमंण करीजै।।41।।
मो सीता अरधंग्या माता। भुजा दाछिणी लषमंण भ्राता।।42।।
सीता लषमंण सहित सजोध्या। अहं आइ हें बहुत अजोध्या।।43।।

जटायु प्रसंग

सोरठा (दूहा)

अळगौ जाय रथ आंणि। सीता वैसांणी सती।
प्रभु वाकारि न पांणि। चोरी हरि घरि चालियौ।।1।।
ग्रीध औळखी गडूरि[1] (गरूर[2]), सीता क्रोसंती सती।
उडै जटायु अडू रि। रथ लंकेसर रोकियौ।।2।।
रथ ग्रधराज म रोकि। जांवण दे रांमंण जपै।
ले मेल्हिसि जंमलोकि। मूरिख कांय परकाजि मरै।।3।।
रामंण दसरथ राय। मीत सखा नित माहरौ।
जनक सुता किम जाय। व्रिध हौं ग्रीध ऊभै वधु।।4।।
जुध दहकंध जटायु। चंच नखां पंख चापटां।
रथ भागौ पंख राय। छत्र धजा घोड़ा सहित।।5।।
साचवि आवध सूर। भिड़ि दसमुख वीसे भुजे।
चंच पांखां कीय चूर। गोडवियौ राकस गिरध।।6।।
ग्रीध वडौ गजगाह। कीधौ वहि दहकंध सौं।
सजि कंध रथ सीताह। गौ मारगि गयणां गिरै।।7।।

××

चंचा चूर थियांह। पड़िया दळ तुंदळ पगां।
पांखां पींजरीयांह। अंत वेळा आया अनंत।।8।।
रुळतै वाखर रंगि। गोद लियौ राघव गिरध।
जीतौ तैं रंण जंगि। आखिसि हौं दसरथ अनुंज।।9।।
मुख जिंणि देखौ मोर। सास थकै लंकेसवर।
जोवणवंत सजोर। व्रध मो वधि लेगौ वधू।।10।।
रीझे ग्रीध रघुराय। सूरां निधि दसरथ सखा।
जंण वैकुंठ जटाय। पहुंचायौ वैकुंठ पति।।11।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

काजा=वास्तै, कारण। त्रेड़ै=बुलावै। तांम=उणीज बगत। धांम=महल। संहसदस=दस हजार। आंणि=आया, आयनै। वेगि=जल्दी, उणीज टैम, अविलंब। धाट्ट=बांग देयनै रोवणौ। लागी गळि=गळै लगाया। वाचा=वचन। पैनौ=पैलौ। पठावौ=भेजौ। पयंपै=कैवै, कैवणौ। पाथरि, लोह=पत्थर अर लोह री लकीर, द्रिढ निस्चै। पेखीजै=रैवणौ चाईजै, देखणौ चाईजै, कहीजै। संपेखै=कैवै (समझावण रा भाव सूं)। संग्रहिया=बहीर होया। मदनांजित=आसक्त स्त्री रै वस में। पंणि=पण, परंतु। पोखी=पाळ–पोखनै बडौ करणौ। त्रियजीत=स्त्री री बातां में आयोड़ौ, उणरै वस में होयोड़ौ। रेणका=रिसी जमदग्नि री जोड़ायत अर परसुराम री माता, सती नारी। भणै=कैवै। मुणिजै=मानीजै।

ऊभै=म्हारै होवता थकां। टीलौ=राजतिलक। भवंण=त्रिभुवन, तीनूं लोकां नैं मिटावण री बात। पोरिष=बळ, पौरुष, साहस, वीरता। सेस सहसफण=सेसनाग, सहस्र फणां वाळौ सांप। सीख=विदा, जावण सारू आग्या। मोनौं=म्हनैं, मनै। हीतौ=सूं। निमष=क्षण, अेक पलक ई। अनंत कोटि कुळ=करोड़ां पीढियां। उधरि=उद्धार होवै। सीता मौनै लेखै=सीता नैं म्हारै बराबर देखजै, मतळब माता ज्यूं। सरिसा=सरीखा, तुल्या, ज्यूं। सुवर=श्रेष्ठ वर। सर=अवसर। वाजिग=बाघ, बाजा। वदिण=बिरुदावली गावण वाळा। हेमर रथ=सज्योड़ौ रथ। साथी=बरोबर री उमर वाळा सखा। भरता=पति। सौं=सूं। यम=इण भांत, इण तरै। भाखै=कैवै। पाखै=अभाव में, दरसण बिना। वारण=हाथी, भयानक डरावणा जानवर। दैति=दैत्य। राखिस=रागस, राक्षस। दारण=दारुण। यंद्र पदवी सुख=इन्द्रलोक जैड़ौ या सातूं सुख। संभरीजै=सुणौ। भणै=कैवै। रिख्या=रिछ्या, रक्षा। सजोध्या=वचन पाळणा करनै सुख-संतोस रै साथै। वैसांणी=बैठाई। आंणि=लेयनै। वाकारि=ललकारियौ। पांणी=मरजादा, लज्जा होवती तौ। ओळखी=पिछाण ली। गड़ू रि (गरूर)= स्वाभिमानी सती नारी। अडू रि=निरभीक। जपै=कैवै। मेल्हिसि=भेज देवूंला। परकाजि=परायां वास्तै। मीत सखा=गैरा मित्र। व्रिध=मित्रता रौ विरद नीं लजाऊं। पंखराय=महाबळी जटायु, गिद्धराज। साचवि=कृत संकळपित देखनै। गोडवियौ=धरासायी। गजगाह=महाग्रीव जटायु। कीधौ वहि=प्रहार करियौ। गयणांगिरै=आकास मारग सूं। दळ तुंदळ=आपस में व्हिया संघर्ष सूं, प्रहार सूं। पांखां पींजरीयांह=पींज्योड़ी रूई जैड़ी पांख्यां, बिखर्‌योड़ी पांख्यां। वेळा=बगत, समै। जिणि=मत। सूरा निधि=वीर सिरोमणी।

सवाल

विकळपाऊ पडू़त्तर वाळा सवाल

1. 'राम रासौ' रा रचनाकार है—

   (अ) राव रणमल्ल (ब) ईसरदास
   (स) चांदा वीरमोत (द) माधवदास दधवाड़िया

   ( )

2. 'राम रासौ' रौ काव्य-रूप है—

   (अ) चम्पु काव्य (ब) महाकाव्य
   (स) खंड काव्य (द) काव्य-गीत

   ( )

3. माधवदास दधवाड़िया नैं नापावास गांव री जागीर दी—

   (अ) अचलदास रायमलोत (ब)महाराजा मानसिंह
   (स) जोधपुर महाराजा सूरसिंह (द) आं मांय सूं कोई नीं

   ( )

4. 'राम रासौ' में वरणन रौ विसय है—

   (अ) राम अर रावण रौ जुद्ध (ब) कैकयी री करतूत रौ वरणन
   (स) भरत अर राम रौ मिळाप (द) राम रौ आवगौ जीवण-चरित्र

   ( )

सा्व छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. माधवदास दधवाड़िया रै पिता रौ नांव कांई हौ?
2. माधोदास दधवाड़िया रा इस्टदेव कुण हा?
3. लक्ष्मण री माता रौ नांव कांई हौ?
4. 'जटायु' सूं आप कांई समझौ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'राम रासौ' में महाकाव्य री विसेसता सारू कोई तीन रौ वरणन करौ।
2. श्रीराम कित्ता बरसां वास्तै बनवास गिया अर क्यूं?
3. बनवास में राम रै साथै कुण-कुण गिया, उणां रौ राम सूं कांई संबंध हौ?
4. 'जटायु' किणरी रिछ्या करणी चावै अर क्यूं?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'राम रासौ' अेक महाकाव्य है। इणरी काव्यगत विसेसतावां रौ वरणन करौ।
2. आज रा जुग में 'राम रासौ' महाकाव्य री प्रासंगिकता दाखलां समेत बतावौ।
3. पाठ में आया 'राम रासौ' रै काव्यांस रौ भाव आपरै सबदां में लिखतां इणरी विसेसतावां नैं उकेरौ।
4. ''जटायु प्रसंग में आयौ वरणन मानवी संवेदनावां नैं जगावण वाळौ है।'' इण कथन नै पुख्ता करण सारू प्रसंग री विरोळ करौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. माता सीख रघुपति मांगै। तांम लषमंण राज तियागै।।
कहै सुमित्रा आग्या कीजै। लषमंण बंधव साथै लीजै।।
2. भरता सौं यम सीता भाखै। पलक न जीऊं दरसंण पाखै।।
वदै रांम वंनि सिंघ र वारण। दैति नाग राखिस दु:ख दारण।।
3. रथ ग्रधराज म रोकि। जांवण दे रांमंण जपै।
ले मेल्हिसि जंमलोकि। मूरिख कांय परकाजि मरै।।
4. मुख जिंणि देखौ मोर। सास थकै लंकेसवर।
जोवणवंत सजोर। व्रध मो वधि लेग ी वधू।।